Str. 9. a. Die Scholien: म्रिवितातिरिक्तिंसितर्वापाः । कदाचिद्पि र्वा (ऊतिं) न विमुचतीत्यर्थः । सनेत्संभजेत ।

b. Die Scholien bei Stev. सक्सिणं प्रकृतो (sic) विकृतिषु च वर्त-मानवेन सक्स्रसंख्यायुक्तं । Rosen: « fruatur hoc sacrificali cibo multiplici.»

c. पांस्या (= पांस्यानि) = पुंस्तानि बलानि Vgl. Nigh. II. 9. Str. 10. c. Die Scholien: यवया (von यु) = ग्रस्मतः पृथक्कुरु ।

HYMNE VI.

(Str. 1-3, 10. an Indra, Str. 4-9 an die Marut's.)

(Str. 1, 2. $\equiv V \bar{a} g' as$. $Sa\tilde{m}h$. XXIII. 5, 6. Str. 2. \equiv ebend. XXIX. 37. Str. 1 = 3. $\equiv S\bar{a} m a v$. II. 7. 1. 12. Str. 5, 7. \equiv ebend II. 2. 2. 7.)

Str. 1. Rosen: Vereor ne scholiastes, hunc versum illustrans, nimio partium serioris Vedanticorum philosophiae studio se duci passus sit. Sunt ejus verba haec: इन्द्रेग कि पर्नेम्प्रपंतृतः। पर्नेम्प्रपं च मित्रावाद्यादित्यन्तन्त्रत्रदेपाावस्थानाइपपयते। ब्रथ्मादित्यत्रपेपावस्थितं। महणं किंसकरिताग्रित्रपेपावस्थितं। चर्त्तं वायुत्रपेपा सर्वतः प्रसर्त्तमिन्द्रं। परितस्थुषः परितो प्वस्थिता लोकत्रयवितिः प्राणिना पुन्नित स्वकीय-कर्मणि देवतावेन संबद्धं कुर्वति। तस्य चेन्द्रस्य मूर्तिविशेषभूता राचना नत्तत्राणि दिवि युलोके राचने प्रकाशने। Affert deinde hunc ex Brahmanis locumः पुन्नित ब्रध्मित्याक्। म्रीनिवा (d.i.वे) म्रादित्या ब्रधः। म्रादित्यमेवास्मै युनिति। महण्यमित्याक्। म्रीनिवार्ये प्रति प्रति। म्रीनिवारमे युनिति। महण्याक्। म्रादित्यक्ष इत्योक्। इमे वे लोकाः परितस्थुषः। इमानेवास्मै युनिति। परितस्थुष इत्योक्। इमे वे लोकाः परितस्थुषः। इमानेवास्मै लोकान्युनिति। रोचने राचना दिवि। नत्तत्राणि एवास्मै राचना दिवीत्याक्। नत्त्राणि वे राचना दिवि। नत्तत्राणि एवास्मै राचयतीति। Rosen's Uebersetzung lautet: «Junctim nuncupant (Westergaard u. युत् «meditantur») nitidum, integrum, mobilem-